विचार बिन्दु

लोगों की समझ शक्ति के मुताबिक उपदेश देना चाहिए। –हदीस

घर-घर औषधि योजना में शामिल तुलसी, गिलोय, कालमेघ व अश्वगंधा पर कोविड-19 के विरुद्ध क्लिनिकल ट्रायल्स

राजस्थान सरकार की घर-घर औषधि योजना में सम्मिलित औषधियों का वैज्ञानिक विश्लेषण गत वर्ष यहाँ किया जा चुका है। वर्तमान लहर को देखते हुए इन औषधियों पर वर्ष 2022 में दिसम्बर तक हुये क्लिनिकल ट्रायल्स पर एक बार पुनः चर्चा है। आधुनिक चिकित्सा पद्धति की संचारी और गैर-संचारी रोगों को रोक सकने में व्यापक रणनीतिक असफलता और प्रमाण-विहीनता ने आयुर्वेद की ओर देखने के लिये विवश कर दिया है। प्रश्न यह है कि क्या आयुर्वेद भारत को एक बार पुनः कोविड-19 के संकट से उबार सकता है? इस प्रश्न का उत्तर कई प्रकार से दिया जा सकता है, परन्तु क्लिनिकल ट्रायल्स से प्राप्त परिणामों का विश्लेषण सर्वाधिक महत्वपूर्ण रहेगा। यहाँ कोविड-19 पर हुये क्लिनिकल ट्रायल्स पर चर्चा की जायेगी।

दुनिया भर में तुलसी, कालमेघ, अश्वगंधा और गिलोय पर 500 से अधिक क्लिनिकल ट्रायल्स हैं। इन औषधियों के योग वाली औषधियों पर कोविड-19 के विरुद्ध 36 क्लिनिकल ट्रायल्स अभी तक प्रकाशन में आ चुके हैं पर सभी की चर्चा यहाँ नहीं की जा सकती। केवल कुछ उदाहरण देखते हैं।

सबसे पहले कोविड-19 के विरुद्ध हुये क्लिनिकल ट्रायल्स और पायलट स्टडीज को देखते हैं जिनमें तुलसी, कालमेघ, अश्वगंधा और गिलोय या तो एकल औषधि के रूप में या आयुर्वेद की अन्य औषधियों के साथ मिलकर प्रयुक्त हुये हैं। कोरोना वायरस संक्रमण में आयुर्वेदिक दवाओं के प्रभाव को समझने के लिये कोविड-19 के लिये समर्पित पुणे के एक अस्पताल में कुल 99 पॉजिटिव रोगियों में एक क्लिनिकल अध्ययन किया गया। इन 99 रोगियों में से 60 रोगियों को मानक प्रोटोकॉल से साथ आयुर्वेद भी दिया गया, जबकि 39 रोगियों को केवल मानक प्रोटोकॉल से उपचारित किया गया। अध्ययन का उद्देश्य यह देखना था कि कोविड-19 के रोगियों में मानक प्रोटोकॉल के साथ आयुर्वेदिक चिकित्सा का कोई लाभ होता है या नहीं। इस प्रोस्पेक्टिव, ओपन लेबल, तुलनात्मक क्लिनिकल अध्ययन में हल्के से मध्यम लक्षणों वाले रोगियों में स्टैंडर्ड प्रोटोकॉल के साथ आयुर्वेदिक चिकित्सा को अतिरिक्त रूप से दिया गया। तुलनात्मक प्रभाव को समझने के लिये नियंत्रण-समूह (कण्ट्रोल-ग्रुप) को केवल देखभाल का मानक प्रोटोकॉल ही दिया गया। मानक देखभाल के साथ साथ आयुर्वेद की चिकित्सा प्राप्त करने वाले रोगियों में बीमारी से तुलनात्मक रूप तेजी से रिकवरी हुई। उपचार-समूह के रोगियों को नियंत्रण-समूह के लोगों की तुलना में लक्षणों में कमी और अस्पताल में रहने की अवधि में बहुत कमी पायी गयी। सांस की तकलीफ से पीड़ित रोगियों का प्रतिशत आयुर्वेद सहित उपचार-समूह में 1, 3 और 7 दिन में 53 प्रतिशत से गिरकर 16 प्रतिशत और 1.6 प्रतिशत रह गया, जबकि नियंत्रण-समूह में क्रमशः 46 प्रतिशत से 38 प्रतिशत और 28 प्रतिशत ही नीचे आया। स्वाद-हानि को कोविड-19 का एक महत्वपूर्ण लक्षण माना जाता है। उपचार-समूह में रोगियों का प्रतिशत 75 प्रतिशत नीचे आकर 25 व 3.3 रह गया, जबकि नियंत्रण-समूह में यह गिरावट 46 प्रतिशत से 36 व 26 प्रतिशत थी। यह पेपर निर्विवाद रूप से सिद्ध करता है कि मॉडर्न-बायोमेडिसिन की मदद के लिये आयुर्वेद चिकित्सा को खड़ा करते ही रोगियों को भारी लाभ होता है (देखें, पंकज वंजरखेड़कर एवं अन्य, जर्नल ऑफ़ आयुर्वेदा एंड इंटीग्रेटिव मेडिसिन, 13(1): 100365, 2022)।

दूसरा प्रकाशित क्लिनिकल ट्रायल लखनऊ में हुआ। कोविड-19 के लिये समर्पित अस्पताल में एक रैंडोमाइज़्ड, ओपन लेबल, समानांतर समूह अध्ययन माइल्ड लक्षणों वाले रोगियों के प्रबंधन में आयुर्वेदिक हस्तक्षेप की प्रभावकारिता का मूल्यांकन करने के लिये हुआ। यह 10 दिन का अध्ययन था जिसमें कुल 120 पॉजिटिव मरीजों को शामिल कर तीन समूहों में बांटा गया। सभी रोगियों का आरटी-पीसीआर क्रमशः 5वें, 7वें और 10वें दिन किया गया। आयुर्वेद चिकित्सा के परिणामस्वरूप कोविड-19 मरीजों के लक्षणों में सुधार, अग्नि में वृद्धि और संक्रमण से मुक्ति देखी गई। आयुर्वेदिक दवाओं पर रखे गये रोगियों में लक्षणों में सुधार व वायरल नियंत्रण पाया गया। अध्ययन में मिले आशाजनक परिणाम आयुर्वेद द्वारा कोविड-19 रोगियों के प्रबंधन में उपयोगी हैं। आयुर्वेद का उपयोग सामुदायिक प्रसार को सीमित करने और बीमारी को अधिक भयावह स्थिति तक जाने से रोकने के लिये किया जा सकता है (देखें, आदिल रईस एवं अन्य, जर्नल ऑफ़ आयुर्वेदा एंड इंटीग्रेटिव मेडिसिन,13(2): 100393, 2022)।

तीसरा क्लिनिकल ट्रायल जयपुर में पूरा किया गया है। यह क्लिनिकल ट्रायल 100 मरीजों पर हुआ और यह पाया गया कि तीसरे दिन जहाँ आयुर्वेद उपचार ग्रुप में 71.1 प्रतिशत मरीज ठीक हुये वहीं प्लेसीबो समूह में और 50 प्रतिशत रोगी ठीक हुये। आयुर्वेद उपचार समूह में 7 दिन के अन्दर 100 प्रतिशत रोगी ठीक हुये, जबकि प्लेसीबो समूह में यह 60 प्रतिशत था। उपचार समूह में संक्रमण से उबरने के जोखिम में 40 प्रतिशत कमी पायी गयी। (देखें, गनपत देवपुरा एवं अन्य, फाइटोमेडिसिन, 84: आर्ट. 153494, 2021)।

चौथा क्लिनिकल ट्रायल मेदान्ता हॉस्पिटल में हल्के से मध्यम तीव्रता वाले कोविड-19 रोगियों में गुडूची और पिप्पली युक्त आयुर्वेदिक फॉर्मूलेशन को लेकर हुआ। परिणामों का मूल्यांकन अस्पताल में रहने की अवधि, क्लिनिकल रिकवरी का समय, आयुर्वेदिक उपचार की सुरक्षा आदि के संदर्भ में किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से पता चलता है कि टीनोस्पोरा कॉर्डिफोलिया और पाइपर लोंगम के आयुर्वेद ऐड-ऑन फॉर्मूलेशन ने अस्पताल में रहने की अवधि को कम कर दिया। ठीक होने के समय में सुधार किया। आयुर्वेद ऐड-ऑन समूह में डिस्चार्ज के तीन महीने बाद भी रोगी दुरुस्त हालत में ही पाये गये और जीवन-यापन गतिविधि का स्तर सामान्य है तथा स्वास्थ्य बेहतर है। इस प्रकार कोविड-19 के उपचार में इस योग की मदद से मिले बेहतर परिणामों से एक सुरक्षित आयुर्वेद ऐड-ऑन फॉर्मूलेशन उपयोगी है। इस अध्ययन में देश के दिग्गज डॉक्टर नरेश त्रेहान भी शोधकर्ताओं और लेखकों की सूची में हैं (देखें, एस. कटारिया एवं अन्य, जर्नल ऑफ़ आयुर्वेदा एंड इंटीग्रेटिव मेडिसिन, 13(2): 100454, 2022)।

क्लिनिकल ट्रायल्स में तुलसी, कालमेघ, अश्वगंधा और गिलोय या तो किसी न किसी अन्य द्रव्य के साथ प्रयुक्त हुये हैं या एकल औषधि के रूप में प्रयुक्त हुये हैं या सभी को एक साथ भी प्रयुक्त किया गया है। पूर्व में वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करते समय यह स्पष्ट किया गया था कि चारों ही औषधियां कोविड-19 समेत अनेक रोगों के विरुद्ध प्रभावी हैं और इन्हें वैद्य की सलाह से लेने पर रोगमुक्त हुआ जा सकता है।

क्लिनिकल ट्रायल्स के साथ ही अनेक उच्च कोटि की क्लिनिकल केस स्टडीज भी आयुर्वेद के अगुआ शोध जर्नल में प्रकाशित हुई हैं। इन सबके निष्कर्ष भी आयुर्वेद को मजबूती से कोविड-19 के विरुद्ध प्रभावी सिद्ध करते हैं। उदाहरण के लिये हाल ही में प्रकाशित क्लिनिकल केस-स्टडी के अनुसार कोल्डकैल व त्विषाअमृत कोविड-19 के उपचार में पूर्ण प्रभावी पायी गयी हैं (देखें, संजीवरस्तोगी, रंजनारस्तोगी, अतुल खरबंदा, जर्नल ऑफ़ आयुर्वेदा एंड इंटीग्रेटिव मेडिसिन, 13(1): 100411, 2022)। इसके साथ ही आगे प्रकाशनार्थ भेजी गयी केस स्टडीज, जो बड़ी संख्या में वैद्यों के चिकित्सकीय अनुभवजन्य प्रमाण (प्रैक्टिस-बेस्ड-एविडेंस) पर आधारित हैं, के अनुसार कोविड-19 की चिकित्सा में आयुर्वेद की औषधियां प्रभावी पायी गयी हैं। विख्यात आयुर्वेदाचार्य डॉ. वी.बी. मिश्रा एवं अन्य वैद्यों के प्रैक्टिस-बेस्ड-एविडेंस से ज्ञात होता है कि आयुर्वेद बचाव और प्रबंध दोनों में ही उपयोगी है। वस्तुतः आयुर्वेद के माध्यम से कोविड-19 विषयपर प्रकाशित हमारा पेपर अब अपने विषय में विश्व भर में सबसे ज्यादा चर्चित और सर्वाधिक-संदर्भित पेपर है (देखें, संजीव रस्तोगी, दीप नारायण पाण्डेय व राम हर्ष सिंह, जर्नल ऑफ़ आयुर्वेदा एंड इंटीग्रेटिव मेडिसिन, 13(1): 100312, 2022)।

एक अन्य केस स्टडी जो 64 बुजुर्ग प्रवासी भारतीयों के मध्य की गयी तथा कोविड-19 के 11 लक्षणों तथा अंततः जीवित रहने का मूल्यांकन हुआ। परिणामों से स्पष्ट हुआ कि आयुर्वेद की औषधियों के कारण वैश्विक आंकड़ों की तुलना में मृत्यु दर बहुत कम हो गयी। इसके अलावा सह-रुग्णता वाले किसी भी मामले में उपचार-हस्तक्षेप की अवधि के दौरान गंभीर लक्षण, जटिलतायें या मृत्यु नहीं हुई। इस ट्रायल में तुलसी सहित अन्य औषधियों को प्रमुखता से उपयोग किया गया था (देखें, के.एस. दिनेश इत्यादि, जर्नल ऑफ़ आयुर्वेदा एंड इंटीग्रेटिव मेडिसिन, 13(1):100476, 2022)।

एक अन्य अध्ययन को 247 कोविड-19 रोगियों के मध्य रेट्रोस्पेक्टिव केस श्रृंखला के रूप में प्रकाशित हो रहा है, जिनमें से 39 प्रतिशत मरीज को-मोर्बिडिटी से पीड़ित थे। इस प्रकाशन में ऐसे सात रोगी थे जिनके बचने की संभावना कम थी किन्तु केवल आयुर्वेदिक उपचार के बाद सभी में लक्षणों के समाधान के साथ सभी मरीज कोविड-19 से पूरी तरह ठीक हो गये (देखें, पी.एल.टी. गिरिजा इत्यादि, जर्नल ऑफ़ आयुर्वेदा एंड इंटीग्रेटिव मेडिसिन, 13(1): 100329, 2022)। एक अन्य अध्ययन 167 कोविड-19 रोगियों के उपचार के परिणामों की जानकारी देता है। इन सबका उपचार अकेले आयुर्वेदिक चिकित्सीय हस्तक्षेप से किया गया था। मुख्य परिणाम यह पाये गये कि लक्षणों का त्वरित समाधान हुआ और एक भी रोगी गंभीर अवस्था की ओर नहीं जाने पाया। अनेक को-मोर्बिडिटी युक्त रोगियों के लिये भी आयुर्वेद एक सुरक्षित उपचार के रूप में सिद्ध हुआ है। इनमें से एक भी रोगी की मृत्यु नहीं हुई। आयुर्वेदिक दवाओं के कारण कोई प्रतिकूल घटना भी नहीं हुई। वस्तुतः यह अध्ययन एक अनुभवजन्य या प्रैक्टिस-बेस्डएविडेंस प्रदान करता है जिसमे आउट पेशेंटसेटिंग में और कम लागत पर कोविड-19 मरीजों को ठीक करने के पुख्ता प्रमाण मिले (देखें, पी.एल.टी. गिरिजा इत्यादि, जर्नल ऑफ़ आयुर्वेदा एंड इंटीग्रेटिव मेडिसिन, 13(2): 100445, 2022)।

दो औषधियों के एक अध्ययन में हल्के से मध्यम लक्षणों वाले 125 रोगियों के प्रबंधन में मानक एलोपैथी उपचार के साथ-साथ सिद्ध पॉलीहर्बल काढ़ा कबासुराकुडिनीर की उपयोगिता प्रमाणित हुयी है। इसमें कालमेघ और गुडूची भी घटक हैं। यह एक डबल-ब्लाइंड, प्लेसीबो-नियंत्रित क्लिनिकल ट्रायल था। अध्ययन को 120 रोगियों ने पूर्ण किया। इस अध्ययन में स्पष्ट हुआ कि जहां एक ओर सिद्ध औषधि के साथ 6 दिन के अंदर शत-प्रतिशत मरीज ठीक हो गये, वहीं कंट्रोल ठ्रुप में 42.5 प्रतिशत ही इस दौरान ठीक हो पाये। रोगियों के अस्पताल में ठहरने का समय तथा एसिंप्टोमेटिक होने का समय भी तुलनात्मक रूप से कम होना पाया गया (देखें, ए. श्रीवास्तव इत्यादि, ट्रायल्स, 22(1): 570, 2021)। इसी प्रकार के निष्कर्ष एक अन्य अध्ययन के भी हैं (देखें, एस. नटराजन इत्यादि, ट्रायल्स, 22(1): 623, 2021)।

वस्तुतः बहुत से अध्ययन हैं और सब का वर्णन या सभी का सन्दर्भ देना यहाँ संभव नहीं है लेकिन कोविड-19 के रोगियों के प्रबंधन में हर्बल या पादपीय दवाओं की भूमिका पर 32 रैंडमाइज्ड कंट्रोल्ड ट्रायल्स में समाहित कुल 3,177 रोगियों के आंकड़ों की एक व्यवस्थित समीक्षा और मेटा-एनालिसिस स्पष्ट सिद्ध करती है कि वेस्टर्न मेडिसिन के साथ औषधीय पौधों के सह-प्रयोग से बुखार, खांसी, थकान व छाती के पैरामीटर्स में सुधार, आरटी-पीसीआर के आधार पर रोगमुक्त होने में लगा समय, गले की खराश और अस्पताल में रहने की अवधि में कमी आती है। प्रयोगशाला में जांच के पैरामीटर्स (जैसे, डब्ल्यूबीसी, लिम्फोसाइटप्रतिशत, एब्सोल्यूटलिम्फोसाइटकाउंट, सीआरपी, आईएल-6, ईएसआर स्तर) भी केवल मानक देखभाल समूह की तुलना में औषधीय पौधों के साथ वाले दवा समूह में बेहतर पाये गये। सबसे बड़ी बात यह थी कि अध्ययन में सम्मिलित 32 रैंडमाइज्ड कंट्रोल्ड ट्रायल्स में औषधीय पौधों से बनी इन दवाओं के कारण कोई विशेष प्रतिकूल घटना नहीं देखी गई (देखें, ए. कुमार इत्यादि, जर्नल ऑफ़ ट्रेडिशनल एंड कॉम्प्लिमेंटरी मेडिसिन, 12(1), ज्ज100-113, 2022)।

अश्वगंधा जिस पर कुल 4,625 शोधपत्रों में से 485 कोविड-19 के विरुद्ध हैं। कालमेघ पर कुल 4,166 शोधपत्रों में से 646 कोविड-19 के विरुद्ध हैं। तुलसी पर कुल 2,576 शोधपत्रों में से 305 कोविड-19 के विरुद्ध हैं। गुडूची पर कुल 1661 शोधपत्रों में से 387 कोविड-19 के विरुद्ध हैं। असल में तो तुलसी, कालमेघ, अश्वगंधा, गिलोय और एक वैद्य मिलकर 150 से अधिक बीमारियों से बचा सकते हैं! भारत को अब भी नहीं समझ में आएगा तो कब आएगा!

यहां पर हमने अनेक क्लीनिकल ट्रायल और क्लीनिकल केस स्टडीज का उदाहरण प्रस्तुत किया है। प्रत्येक प्रकरण में औषधियों का वर्णन यहां संभव नहीं है। लेकिन इतना बताना आवश्यक है कि इन क्लिनिकल ट्रायल्स में तुलसी, कालमेघ, अश्वगंधा और गिलोय या तो किसी न किसी अन्य द्रव्य के साथ प्रयुक्त हुये हैं या एकल औषधि के रूप में प्रयुक्त हुये हैं या सभी को एक साथ भी प्रयुक्त किया गया है। पूर्व में वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करते समय यह स्पष्ट किया गया था कि चारों ही औषधियां कोविड-19 समेत अनेक रोगों के विरुद्ध प्रभावी हैं और इन्हें वैद्य की सलाह से लेने पर रोगमुक्त हुआ जा सकता है। **यदि वर्ष 2023 में कोविड-19 की कोई लहर भारत में आती है तो वैद्यों की सलाह से तुलसी, कालमेघ, अश्वगंधा और गिलोय जैसी औषधियों का प्रयोग मददगार हो सकता है। असल में लहर और वैरिएंट कोई भी हो आयुर्वेद सदैव प्रासंगिक है। मॉडर्न मेडिसिन की यदा-कदा सहायक भूमिका है।** घर-घर औषधि योजना के अंतर्गत औषधीय पौधों का राजस्थान की पौधशालाओं में वितरण हो रहा है। पौधे प्राप्त कर अपने घर में लगाइये। रखरखाव करिये। उनसे प्राप्त होने वाले बीजों से और अधिक पौधे उगाइये। वैद्य की सलाह लीजिये। स्वस्थ रहिये और परिवार को स्वस्थ रखिये।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फारेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

वाक् चातुर्य के धनी जन-जन के नायक अटल बिहारी वाजपेयी

डा. जे के गर्ग

वाक चातुर्य के धनी राष्ट्र भक्त राजनीतिक कुशलता चातुर्य एवं कूटनीति और आचार्य चाणक्य की निश्चयात्मिका बुद्धि के धनी राजनीतिज्ञ व्यक्तियों में जन नायक अटल बिहारी का नाम सम्मान के साथ लिया जाता हैं क्योकिं अटल जी ने अपने जीवन का प्रत्येक क्षण राष्ट्र सेवा हेतु अर्पित किया था। उनका तो मन्त्र था 'देश के लिए जियें और देश के लिए ही मरें', 'भारत माता का कण-कण शंकर है', वहीं 'पानी की बूंद-बूंद गंगाजल है'। अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा था कि भारत जमीन का टुकड़ा नहीं, भारत तो जीता-जागता राष्ट्रपुरुष है। यह वन्दन की भूमि है, यह तर्पण की भूमि है, यह अर्पण की भूमि है। अटलबिहारी वाजपेयी कहा करते थे कि मनुष्य जीवन अनमोल निधि है, पुण्य का प्रसाद है। हम केवल अपने लिए न जिए, औरों के लिए भी जिए। उन्होंने अनेको बार कहा है कि भारत के लिए हँसते-हँसते प्राण न्योछावर करने में मैं गर्व का अनुभव करूँगा।

अटल बिहारी जी का जन्म ग्वालियर में 25 दिसम्बर 1924 को हुआ था उनके माता पिता कृष्ण बिहारी वाजपेयी एवं कृष्णा वाजपेयी था। रामचंद्र वीर द्वारा रचित अमर कृति 'विजय पताका' पढ़कर अटल जी के जीवन की दिशा ही बदल गयी। अटल जी की बी.ए. की शिक्षा ग्वालियर के विक्टोरिया कॉलेज में हुई। उन्होंने राजनीति शास्त्र से प्रथम श्रेणी में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। एलएलबी की पढ़ाई को बीच में ही विराम देकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के काम में लग गए। भारतीय जनसंघ के संस्थापक सदस्यों में से अटल जी भी प्रमुख नेताओं में थे। उन्होंने लम्बे समय तक पत्रकारिता करते हुए राष्ट्रधर्म, पांचजन्य और वीर अर्जुन आदि अनेक पत्र-पत्रिकाओं के संपादक के रूप में कार्य किया। अटल बिहारी ने अपना सार्वजनिक जीवन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक के रूप में आजीवन अविवाहित रहने का संकल्प लेकर प्रारम्भ किया। सन् 1942 में जब गांधी जी ने 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' का नारा दिया तो ग्वालियर में भी छात्र वर्ग आंदोलन की अगुवाई कर रहा था। अटलजी तो सबके आगे ही रहते थे। जब आंदोलन ने उग्र रूप धारण कर लिया तो पकड़-धकड़ होने लगी। अटल जी पुलिस की चपेट में आ गए। उस समय वे नाबालिग थे इसलिए उन्हें आगरा जेल की बच्चा बैरक में रखा गया।

जन नायक अटल बिहारी वाजपेयी ने खुद को आर.एस.एस. के समर्पित कार्यकर्ता रहने के बावजूद खुद को किसी खास विचारधारा के पहरेदार के रूप में कभी भी स्थापित नहीं होने दिया वो सदैव परस्पर संवाद करने की हामी थे वो इंसानियत के अंदर यकीन करते थे। उनके प्रधानमंत्रित्व काल में कश्मीर से लेकर पाकिस्तान तक से बातचीत का सिलसिला शुरू हुआ था। अलगाववादियों से बातचीत के फैसले पर सवाल उठा कि क्या बातचीत संविधान के दायरे में होगी? तो उनका जवाब था, इंसानियत के दायरे में होगी। अटल जी वास्तव में शब्दों के जादूगर थे। अटल बिहारी जी के राजनीतिक विरोधी भी उनकी वाकपटुता और अकाट्य तर्क के कायल रहते थे। पूर्व के कई राजनीतिक विश्लेषकों के मुताबिक आज की भारतीय जनता पार्टी अटल जी के जमाने की पार्टी से भिन्न होती दिखाई देती है इसके साथ-साथ आज का एन डी ए भी उस समय के एन डी ए जैसा नहीं लग रहा है।

बंगलादेश के मुक्ति संघर्ष के वक्त इन्दिता जी ने संयक्त राष्ट्र संघ में जाने वाले प्रति मंडल का नेत्रत्व उन्हें सौंपा। 1994 में केंद्र की कांग्रेस सरकार ने संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार आयोग में भारत का पक्ष रखने वाले प्रतिनिधिमंडल की नुमाइंदगी विपक्षी नेता अटल जी को सौंपी थी। काश: आज के माहोल में ऐसा हो पाता। अटलजी जब विदेश मंत्री बने तो विभाग के अधिकारीयों ने उनके कक्ष से प्रथम प्रधानमंत्री नेहरुजी की फोटो हटा दिया अटल जी ने नेहरूजी का फोटो वापस लगवाया। उनकी लोकप्रियता का नतीजा था कि वे देश के विभिन्न प्रदेशों यथा उत्तर प्रदेश, गुजरात, मध्य प्रदेश और दिल्ली से सांसद चुने गये। दो बार राज्यसभा के लिये भी निर्वाचित हुए। अटलजी सबसे लम्बे समय तक सांसद रहे थे। जब वे पहली दफा सांसद बने और उन्होंने संसद में अपना भाषण दिया तब तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरूजी ने कहा कि यह युवा सांसद एक दिन इस देश का प्रधानमंत्री बनेगा। वे दो बार राज्यसभा के लिये भी निर्वाचित हुए। पूर्वी पाकिस्तान के विघटन एवं बांग्लादेश देश के जन्म के समय अटल जी ने अपनी राजनैतिक प्रबल विरोधी इंदिरा गांधी जी जी की सराहना की। वाजपेयी राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के पहिले प्रधानमंत्री बने। 2002 के गुजरात के साम्प्रदायिक दंगों में हुई सैकड़ों मौतों के बाद प्रधानमंत्री वाजपेयी जी ने अपनी ही पार्टी के मुख्यमंत्री और वर्तमान में देश के प्रधानमंत्री को राज धर्म के पालन करने की सीख देने की हिम्मत की थी।

वाजपेयी जी ने पाकिस्तान से सामान्य सम्बन्ध बनाने के लिए 19 फरवरी 1999 को लाहौर तक बस द्वारा सफर किया, वाघा बॉर्डर पर तत्कालीन पाक प्रधानमंत्री नवाज शरीफ ने उनका स्वागत किया किन्तु पाकिस्तान ने 3 मई 1999 को कारगिल में अतिक्रमण कर उसे हडपना चाहा, तब भारत ने उसे करारा जवाब दिया। यह संघर्ष 26 जुलाई तक चला, हमारी बहादुर सेना ने कारगिल को अपने कब्जे में ले लिया, इसलिए प्रति वर्ष 26 जुलाई को हम कारगिल विजय दिवस के रूप में मनाते हैं।

13 दिसम्बर 2001 को संसद पर पाकिस्तान प्रायोजित आतंकी हमला हुआ जिसमें नो लोगों की मृत्यु हो गई। यही आतंकी हमला 2004 के चुनावों में प्रमुख मुद्दा बना और एन डी ए की पराजय का एक कारण बना।

वाजपेयी ने अपने प्रधानमंत्री कार्यकाल के दौरान परमाणु शक्ति सम्पन्न देशों की संभावित नाराजगी की परवाह नहीं करते हुए राष्ट्र हित में 1998 में दूसरा परमाणु परीक्षण कर राजनीतिक परिपक्वता का परिचय दिया। स्मरणीय है कि उन्होंने इस परमाणु परीक्षण की अमेरिका एवं अन्य विकसित देशों की गुप्तचर एजेंसियों को भनक तक नहीं लगने दी। अटल जी ने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी, पंडित दीनदयाल उपाध्याय और नानाजी देशमुख आदि नेताओं से राजनीति का पाठ पढ़ा था। अटल जी पहले विदेश मंत्री थे जिन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी में भाषण देकर देश को एवं हिन्दी को गौरवान्वित किया था। अटल जी की वाणी में सदैव विवेक और संयम होता है। गंभीर से गंभीर बात को हंसी की फुलझड़ियों के बीच कह देने की विलक्षण क्षमता उन्हीं में थी।

जननायक वाजपेयी जी ने एक सौ वर्ष से भी ज्यादा पुराने कावेरी जल विवाद को सुलझाया। उन्होंने संरचनात्मक ढाँचे के लिये कार्यदल, सॉफ्टवेयर विकास के लिये सूचना एवं प्रौद्योगिकी कार्यदल, विद्युतीकरण में गति लाने के लिये केंद्रीय विद्युत नियामक आयोग आदि का गठन किया। राष्ट्रीय राजमार्गों एवं हवाई अड्डों का विकास नई टेलीकॉम नीति तथा कोकण रेलवे की शुरुआत करके बुनियादी संरचनात्मक ढांचे को मजबूत करने के लिये कई प्रभावी कदम भी उठाये। ग्रामीण रोजगार सृजन एवं विदेशों में बसे भारतीय मूल के लोगों के लिये बीमा योजना शुरू की। भारत भर के चारों कोनों को सड़क मार्ग से जोड़ने के लिए दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई व मुम्बई को राजमार्ग से जोड़ा गया।

चाहे प्रधान मंत्री के पद पर रहे हों या नेता प्रतिपक्ष बेशक देश की बात हो या क्रान्तिकारियों की, या फिर उनकी अपनी ही कविताओं की नपी-तुली और बेबाक टिप्पणी करने में अटल जी कभी नहीं चूके। अटल जी कहा करते थे कि इंसान बनो, केवल नाम से नहीं, रूप से नहीं, शक्ल से नहीं बल्कि हृदय से, बुद्धि से, ज्ञान से बनो। वे कहते थे कि "भारत को लेकर मेरी एक दृष्टि है- ऐसा भारत जो भूख, भय, निरक्षरता और अभाव से मुक्त हो।" अटलजी ने भारत के प्रजातंत्र को और मजबूती प्रदान की थी।

अटल जी ने अनेकों पुस्तके एवं काव्य संग्रह लिखे जिनमें मेरी इक्यावन कविताएँ, मृत्यु या हत्या, अमर बलिदान (लोक सभा में अटल जी के वक्तव्यों का संग्रह), कैदी कविराय की कुंडलियाँ, संसद में तीन दशक, अमर आग है, सेक्युलर वाद, राजनीति की रपटीली राहें, बिन्दु -बिन्दु विचार आदि मुख्य है। अटल बिहारी जी को अनेकों पुरस्कार और सम्मानों से नवाजा गया जिनमें प्रमुख हैं फ्रेंड्स ऑफ बांग्लादेश लिबरेशन वार अवॉर्ड, भारत रत्न आदि। वे वास्तव में एक महामानव ही थे जिनको इतिहास सदैव याद करेगा। लम्बी बीमारी के बाद जनप्रिय अटल जी 16 अगस्त 2018 को शाम 5 बजे पंचमहाभूत में विलीन हो गये। उनका समाधि स्थल राजघाट के पास शांति वन में बनाया गया जिसे स्मृति स्थल के रूप में जाना जाता है, में है। अटल जी की अस्थियों को देश की सभी प्रमुख नदियों में विसर्जित किया गया। अटल जी के 98वें जन्मदिवस पर सभी भारतीय उन के श्रीचरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

- डा. जे के गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक
कालेज शिक्षा, जयपुर

प्रस्तुतियों में दिखी गुजरात की लखूटी संस्कृति की झलक

मुक्ताकाशी रंगमंच पर गुजरात के कलाकारों ने चोरवाड़ अंचल का टिप्पणी रास प्रस्तुत किया।

उदयपुर, (कासं)। शिल्पग्राम उत्सव में दिन-ब-दिन यहां आने वाले लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है। वीकेंड पर उदयपुर पहुंच पर्यटक भी शिल्पग्राम पहुंचे वहीं रविवार को और अधिक लोग इस उत्सव का हिस्सा बनेंगे। इधर, चौथे दिन मुक्ताकाशी रंगमंच पर गुजरात की लखूटी संस्कृति की झलक देखने को मिली।

दोपहर में केन्द्र की ओर से मुख्य रंगमंच के समीप "क्ले मॉडलिंग" प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। केन्द्र निदेशक किरण सोनी गुप्ता तथा गोवा के कला एवं संस्कृति विभाग के उप निदेशक अशोक परब ने विजेताओं को पुरस्कार दिए। शाम को मुक्ताकाशी रंगमंच पर कार्यक्रम की शुरूआत लंगा लोक गायकों के गायन से हुई इसके बाद गुजरात के कलाकारों ने माण्डव रास से गुजराती संस्कृति का यशोगान प्रारम्भ किया। कार्यक्रम में चोरवाड़ अंचल का टिप्पणी रास बहुत रास आया। निर्माण कार्य में जमीन या छत कूटते हुए महिलाएं हाथ में अिप्पणी ले की गीत गाते हुए नृत्य करती हैं।। प्रस्तुति में आपसी सामंजस्य दर्शनीय बन सका।

इसके बाद मिश्र रास में युवक युवतियों ने मोहक नृत्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में दर्शकों को गुजरात के विभिन्न प्रकार के रास देखने को मिले इनमें हूडो रास, घाघर रास प्रमुख हैं। इस अवसर पर ही गुजरात का ढाल तलवार रास वहां के शौर्य का प्रतीक प्रस्तुति बन सकी। गुजरात के सौराष्ट्र अंचल में ढाल तलवार रास की परंपरा है जिसमें नर्तक शरनाई व ढोल की लय पर हाथ में तलवार ले कर नृत्य करते हैं। जिसमें लयकारी के साथ कलाकारों का नर्तन उत्कृष्ट बन सका।

इस अवसर पर ही गुजरात की जनजाति संस्कृति की झलक छोटा उदयपुर के राठवा आदिवासियों की प्रस्तुति से हुई। सिर पर मोर पंख्या धारण कर राठवा युवक युवतियों ने अपसी तालमेल दिखाते हुए आकर्षक पिरामिड की रचना कर सौम्य दृश्य प्रस्तुत किया। जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति डॉ. एस.एस.सारंगदेवोत मुख्य अतिथि थे।

तीन मोरों का शिकार किया

संजय वन में मोरों को लेकर पहुंचे ग्रामीण।

निवाई, (निसं) गांव डांगरथल में शिकारियों द्वारा लगातार मोर का शिकार करने की घटना से ग्रामीणों में रोष व्याप्त हो रहा है।

शुक्रवार की देर शाम को शिकारियों द्वारा जहरीला दाना खिलाकर तीन मोरों का शिकार किया गया। ग्रामीण राधेश्याम शर्मा सहित अन्य ग्रामीणों ने बताया कि शुक्रवार की देरशाम डांगरथल में कुछ शिकारियों ने मोरों का शिकार करने के लिए जहरीला दाना डाल दिया। दाना खाने के बाद मोरों के तड़फने की आवाज सुनकर ग्रामीण मौके पर पहुंचे। मौके पर एक मोर मृत मिला तथा दो मोर तड़फते हुए मिले। इस पर ग्रामीण दो मोटर साइकिल से मृत व घायल मोरों को लेकर रात्रि करीब साढे आठ बजे निवाई स्थित वन विभाग के कार्यालय संजय वन पहुंचे। वहां पर मौजूद कर्मचारी को उपचार के लिए दोनों मोरों को सौंपा। वनकर्मी ने घायल मोरों की सूचना अधिकारियों को दी। कुछ देर बाद घायल दोनों मोरों की भी मौत हो गई। ग्रामीणों ने बताया कि 18 दिसंबर को भी डांगरथल के जंगल में मृत मोर के अवशेष व जहरीला दाना दिखाई दिया था। इसकी सूचना भी ग्रामीणों ने वन विभाग के अधिकारी कर्मचारी एवं पुलिस को दी थी। साथ ही मौके पर खडी शिकारियों की मोटरसाइकिल भी वन कार्मिकों को सौंप दी थी। उन्होंने बताया कि मृत मोरों के शिकारियों को गिरफ्तार नहीं किया गया तो मजबूर होकर धरना प्रदर्शन करना पड़ेगा।

राशिफल रविवार 25 दिसम्बर, 2022

पंडित अनिल शर्मा

पौष मास, शुक्ल पक्ष, द्वितीया तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2079, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र सांय 7:21 तक, व्याघात योग रात्रि 12:58 तक, कौलव करण प्रातः 8:25 तक, चन्द्रमा मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-धनु, चन्द्रमा-मकर, मंगल-वृष, बुध-धनु, गुरू-मीन, शुक्र-धनु, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से रात्रि 7:21 तक है। त्रिपुष्कर योग दिन 8:25 तक है। रवियोग रात्रि 7:21 से आरम्भ होगा। आज क्रिसमस दिवस (ईसा जयन्ती) बड़ा दिन, महामना मालवीय जयन्ती है। आज तृतीया तिथि का क्षय हुआ है। आज से जमादि उलसानि मु. मास 6 आरम्भ होगा। आज अटल विहारी जयन्ती है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: चर 8:35 से 9:52 तक, लाभ-अमृत 9:52 से 12:27 तक, शुभ 1:44 से 3:01 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 7:17, सूर्यास्त 5:36

मेष

अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

वृष

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है।

मिथुन

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ने का भरय बना रहेगा।

कर्क

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। शुभ कार्य के लिए बाहर जा सकते हैं।

सिंह

अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

कन्या

परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में योजना बनेगी।

तुला

घर-परिवार के कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। रिश्तेदारों/परिजनों के साथ बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।

वृश्चिक

परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है।

धनु

अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मकर

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनःस्थिति में सुधार होगा। व्यक्तिगत परेशानियों में कमी आयेगी। महत्वपूर्ण कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

कुंभ

व्यक्तिगत समस्या के कारण भागदौड़ रहेगी। अनावश्यक धन खर्च होगा। अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। परिवार में वाद-विवाद बढ़ सकते हैं।

मीन

अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे।